********* कहानी **********

अमन की गुलशन

✍ नंदन पंडित

संध्या का समय था। झोपड़ी के बाहर बैठा हुआ एक बूढ़ा पृथ्वी का स्वर्ग, भारत का गर्व और आतंकवादियों का प्राणोत्सर्ग: कश्मीर की निराली छटा निहार रहा था। पक्षीगण आज भी नित्य की भाँति कलरव करते हुए अपने नीड़ को लौट रहे थे। दिवापति दिवाकर भी लगभग आसमान से जाने ही वाले थे। सहसा बर्फीली हवा का एक झोंका आया और उस बूढ़ी जर्जर काया को हिलाकर रख दिया। बूढ़े ने एक गहरी साँस ली मानो अभी सोकर उठा हो। टाटी को लाकर दरवाज़े पर खड़ा किया और स्वयं भीतर आकर अँगीठी के पास बैठ गया। चिलम उठाया, तम्बाकू भरा और आग लगाकर पीने लगा। अभी दो-तीन फूँक ही मारी होगी कि झोपड़ी के भीतर से एक दस बरस की लड़की दौड़ती हुई आई और उसके गले से लिपटकर बोली, “बाबा-बाबा! अब मैं अपने अब्बू और अम्मी से नहीं मिलूँगी और न उनके साथ अपने वतन जाऊँगी।”

बूढ़ा कुछ समझ न सका इसने पूछ लिया, “यह तुम क्या कह रही हो गुलशन बेटी?”

“सही बाबा, क्योंकि अमन कह रहा था कि वहाँ के लोग बहुत क्रूर और हत्यारे हैं। उन्होंने बहुत से बेकसूर हिन्दुस्तानियों की हत्या की है। और ब… ब..”

“हाँ हाँ कहो न बेटी। और क्या?”

“और…और…” वह दुबारा कुछ न बोल सकी। बस रोने लगी।

बूढ़े ने उसके सिर पर प्यार से हाथ फेरा और आँसू पोंछा। और हौसला अफजाई करते हुए कहा, “डरो मत बेटी! बोलो।”

“और बाबा अमन कह रहा था कि उन लोगों ने ही दादी की भी हत्या की थी।”

“तो?” बूढ़े ने प्रश्न किया।

“तो क्या, इतने पापी मुल्क में मैं नहीं रहूँगी। अम्मी और अब्बू सब लोग मिल भी जाएँ तो भी मैं उनके साथ नहीं जाऊँगी।”

"नहीं बिटिया, ऐसा नहीं कहते। वे तेरे माता-पिता हैं। और फिर सभी लोग थोड़े आततायी हैं। कम लोग ऐसे हैं जिन्हें अमन-चैन पसंद नहीं है। या यूँ कहें कि दोनों मुल्कों के बीच शांति स्थापित होने से उनका राजनीतिक वजूद मिटने लगता है। वे लोग ही लोगों को एक दूसरे के खिलाफ भड़काते हैं।"

"और फिर?"

"और फिर क्या? नतीजा वही जो हमारे गाँव में हुआ। उस ताजिया मेले में हुआ और आये दिन होता रहता है।"

"परन्तु फिर भी बाबा…"

"परंतु-वरंतु कुछ भी नहीं। जाओ तुम दोनों खाना खा कर सो जाओ। अमन ऐसे ही बकता है, मैं उसे समझाए देता हूँ।" कहकर बूढ़े ने अमन को पुकार लगाई, "अमन!"

"हाँ बाबा, आया।" अमन डरते हुए पास आया।

"तुम इस बेचारी से क्या बकते रहते हो? अगर दोबारा फिर कुछ कहा तो तेरी हड्डी-पसली तोड़ दूँगा। यह मत समझो कि बूढ़ा हो गया हूँ तो तुझे मारने की ताक़त भी नहीं है मुझमें। जाओ तुम सब खाकर लेट जाओ और मेरा हिस्सा वहीं थाली से ढककर रख देना। मैं बाद में खा लूँगा। जाओ…जाओ!" पास में पड़े एक तिनके को उठाकर वह दौड़ा तो दोनों हँसते हुए भाग खड़े हुए।

'बड़ी मासूम बिटिया है।' बूढ़ा मन ही मन बड़बड़ाते हुए अतीत में डूबने लगा।

मुहर्रम को तीन-चार दिन हुए होंगे। तब भी वह झोपड़ी के ओसारे मैं बैठा हुआ चिलम पी रहा था। अचानक बाहर रोने की आवाज़ सुनाई दी। उसने झोपड़ी से बाहर निकल कर देखा। कोई सात-आठ साल की एक बच्ची सर्द और भय से काँप रही है। बूढ़े ने इधर-उधर देखकर लड़की को बड़े प्यार से झोंपड़ी के अंदर लिया और अँगीठी के पास बिठाकर उससे पूछा, "क्या नाम है तुम्हारा?"

लड़की बस रोती रही। बूढ़े ने अँगीठी को तेज किया तथा प्यार से उसके सिर पर हाथ रखा तो लकड़ी का ठण्ड और डर दोनों जाता रहा और वह बोली, "गुलशन जहाँ!"

रोने का कारण पूछने पर लड़की पुनः रोने लगी। तब बूढ़े ने ढाँढ़स बँधाते हुए कहा, "रो मत बिटिया। इसे भी अपना ही घर समझो। मैं तुम्हारे दादा, बाबा के समान हूँ। अच्छा, अब बताओ किसलिए रो रही थी तुम?

बूढ़े का प्यार और आग्रह पाकर वह लड़की अपनी बदनसीबी सुनाने लगी, "गाँव की कई औरतों के संग मैं अपनी अम्मी के साथ ताजिया मेला देखने आई थी। तभी अचानक सभी भागने लगे। उसी भगदड़ में अम्मी और मेरा साथ छूट गया।"

"तुम्हारा घर कहाँ है?"

"पाकिस्तान में।"

पाकिस्तान का नाम सुनकर बूढ़ा चौंक गया, सरहद के पार है इसका गाँव! हे ईश्वर! क्या होगा इस लड़की का! यह इस पार कैसे आ गई? सरहद के उस पार तो वह जा भी नहीं सकता।

बूढ़े का दिल दुबारा न माना। कदाचित् कुछ पता जाय, उसने लड़की से फिर प्रश्न किया, "पाकिस्तान में कहाँ?"

वह दुबारा रोने लगी।

"बताओ बिटिया, सोचकर बताओ, पाकिस्तान में कहाँ है तुम्हारा घर? तभी तो तुम्हारे अब्बू-अम्मी को मैं ढूँढ पाऊँगा।"

लड़की पुनः निरुत्तर हो गई। बूढ़ा सोचने लगा। शायद लड़की घबराई हुई है। वैसे भी सात-आठ बरस उम्र ही क्या होता है। अचानक उसे ख्याल आया कि यह भूखी होगी।

बूढ़े ने भीतर से लाकर उसे रोटियाँ दी। लड़की भयभीत थी फिर भी भूखी थी। उसने दो रोटियाँ खाकर पानी पिया।

संध्या बीत चुकी थी। रात गदराने लगी थी। लड़की भटकन में थक गई थी। उसे नींद आ गई। बूढ़े ने उसको सो जाने दिया।

सुबह उठकर लड़की पुनः रोने लगी। बूढ़े ने उसके अम्मी और अब्बू को ढूँढ़ लाने का आश्वासन दिया तो लड़की शान्त हुई। कदाचित होनी से हिम्मत पाकर।

लड़की कुछ आश्वस्त हुई तो बूढ़े ने प्रश्न बदलकर मेले की घटना के बारे में पूछा। इस बार वह केवल इतना बता पाई दोपहर बाद जैसे ही मेले में भीड़ बढ़ी यकायक बड़े जोर का धमाका हुआ और सब इधर-उधर भागने लगे।

बूढ़ा समझ गया सारा माजरा। वह समझ गया कि कोई बम विस्फोट हुआ होगा। समझे भी क्यों न? पिछले पचास सालों से काश्मीर की हँसी वादियाँ इन्हीं धमाकों से कराहती आ रही है।

समय के साथ धीरे धीरे लड़की सामान्य होती गई। बाद में उसी ने बताया कि उसके अब्बू कई-कई दिनों तक घर से बाहर रहते हैं और अम्मी जब पूछती हैं तब उनसे लड़ते हैं और उन्हें बेल्ट से पीटते हैं। लेकिन इकलौती सन्तान होने के कारण अब्बूजान उससे बहुत प्यार करते हैं। उसने यह भी बताया कि उस दिन मेले में वह और उसकी अम्मी अब्बू के चोरी गई थी क्योंकि राजी-खुशी वह कभी उन लोगों को घर से बाहर जाने नहीं देते थे।

कुछ दिनों तक बूढ़े ने उसके अब्बू और अम्मी के बारे में यहाँ-वहाँ पता लगाने का प्रयत्न किया। उसने नरमदिल हिन्दुस्तानी पुलिस से संपर्क तो किया ही एकाध चोरी से सरहद पार आने-जाने वाले लोगों से भी लड़की के बारे में पता किया पर लड़की के माँ-बाप का कुछ सुराग न मिला। फिर उसने नियति समझकर उस लड़की को अपनी पुत्री की तरह पालना शुरू कर दिया।

धीरे-धीरे वह सबसे घुल-मिल गई। अमन को भी जो अभी तक अकेला था, खेलने के लिए एक साथी मिल गया। दोनों हम उम्र थे भी इसलिए जल्दी से पटने भी लगी। इस प्रकार वह अपने परिवार के विछोह का दुःख-दर्द भूलकर वर्तमान में मगन हो गई। क्योंकि वक्त में वह फन है कि वो हर जख्म को चाहे वह कितना भी गहरा क्यों न हो, भर ही देता है।

लड़की की आँखों में आँसू देखकर बूढे का मन आज अमन पर बहुत झल्लाया। कितनी बार उसे समझाया है कि वह गुलशन को उसके बीते कल की याद दिलाकर दुःखी न किया करे!

'...पर अमन भी तो उसका अपना सगा नहीं है। उसके पिता ठाकुर नामवर सिंह कितने बड़े जमींदार थे! वह फिर अतीत के अँधेरे में गुम हो गया।

ठाकुर साहब के घर के बगल में ही रामधन का भी घर था। घर में केवल बुढ़िया और वह, दो प्राणी थे। वे दोनों ठाकुर के यहाँ काम करते थे। बुढ़िया चौका-बासन करती और वह बाहर का अन्य कामकाज निपटाता। ठकुराइन एवं ठाकुर दोनों उनको बहुत मानते थे। ठाकुर कहते, "रामधन! दुनिया में जितना भरोसा हमें तुम पर है, उतना खुद पर भी नहीं।"

उनकी बड़ी बेटी अधिकांश समय उन्हीं दोनों के पास रहती थी। ऐसे ही मजे में जिंदगी कट रही थी कि तभी जीवन में एक तूफान आया।

वह एक दिन कहीं गया हुआ था। वहीं पर उसे पता चला कि उसके गाँव में गोलीबारी हुई है। वह उल्टे पाँव भागता हुआ गाँव आया तो करीब समूचा गाँव आतंकवादियों की नृशंसता का शिकार हो चुका था। जो दो-चार जन बचे थे, उन्हीं ने आकर उसे चार वर्ष के अमन को सौंपा और ठाकुर साहब की अन्तिम इच्छा कह सुनाई, जिसके मुताबिक उसको ही बच्चे का पालन पोषण करना था। बाद में हत्याकाण्ड का कारण पता चला, हमेशा की तरह अब भी ये लोग आतंकवादियों को सहयोग नहीं दे रहे थे, उनका कहना नहीं मान रहे थे कि हम पाकिस्तान में रहेंगे। मतलब काश्मीर घाटी पाकिस्तान का हिस्सा है और यहाँ के लोग भी उसी में रहना चाहते हैं।

इस बर्बर नरसंहार के बाद जो लोग जीवित बचे थे वह भयवश गाँव छोड़कर शरणार्थी शिविरों में चले गए। केवल वही एक रह गया था, यह सोचकर कि जिस मिट्टी ने उसे काया दी है वह भी अपनी काया उसे ही सौंपेगा।

इसी बीच गुलशन ने आकर उसे झकझोरा, "आज खाना नहीं खाओगे बाबा?"

वह चौंक पड़ा। बोला, "हँ..हाँ, हाँ, बेटी चलो।"

गुलशन अकेली ही द्वार पर बैठी हुई थी। तभी उधर से आठ-नौ लोगों का एक दल गुजरा। वेशभूषा एवं चाल ढंग से वे सब खतरनाक आतंकवादी लग रहे थे। उसको देखकर वह सब रुक गए। उनमें से एक जो उनका सरदार मालूम पड़ता था, रुककर उसकी ओर बढ़ा और बोला, "ऐ! लड़की, तेरे अम्मा, बाबा कहाँ हैं?"

"क्यों? क्या काम है उनसे?"

"बस ऐसे ही। रुकना था। दो-चार दिनों के लिए शरण चाहिए था।"

"नहीं, कोई शरण नहीं मिलेगा यहाँ। कहीं अलग जाकर ढूँढो।" "लड़की तु बहुत बोलती है! जानती है किससे बात कर रही है?"

"नहीं जानती। और जानकर करूँगी भी क्या?"

"तु बड़ी ढीठ है।"

"हूँ तो हूँ।"

"तु नहीं रुकने देगी तो क्या हम तुम्हारे घर में नहीं रुकेंगे?"

"तो रुककर दिखाओ! मेरे पास यह छुरी है।" -कहकर अपनी कमर में खोसकर रखे चाकू को उसने बाहर निकाल लिया।

उसकी निर्भीकता से चिढ़कर एक काला पोशाकधारी व्यक्ति अपना तमंचा तानकर उसकी ओर बढ़ा।

सरदार ने रोक दिया, "ठहर जा! लड़की है।"

आदमी भुनभुनाकर रह गया, 'बित्ती भर की लौंडी, छप्पन छुरी की बात।'

सरदार उसके करीब आ गया। बोला, "ठीक है लड़की, ठिकाने का हम बाद में देखेंगे। मुझे पानी तो पिला सकती है?"

वह पूर्ववत् निडरता से बोली, "वैसे तो तुम सब इसके लायक नहीं हो। क्योंकि तुम लोग इन्सान नहीं शैतान हो। जो खून से अपनी प्यास बुझाते हैं फिर भी हमारे बाबा कहते हैं कि अगर कोई भूखा-प्यासा दरवाजे पर आकर भोजन या पानी माँगे तो उसे निराश नहीं करना चाहिए, भले ही वो कितना भी पापी क्यों न हो।" इतना कह कर वह घर के अंदर चली गई।

सरदार वहीं बैठ गया और उसके साथी लोग चारों ओर मुस्तैदी से निगहबानी करने लगे। गुलशन भीतर से पानी का घड़ा लेकर आई और कहा, "लो पानी पियो और जल्दी यहाँ से चलते बनो।"

उसकी आवाज़ सुनकर सरदार के कानों के तार झनझना उठे। वह एकटक उसका मुख निहारने लगा। उसके साथी सोचने लगे, आज सरदार को हो क्या गया है? कब से सुनते जा रहे हैं इसकी? इतना तो इन्होंने कभी नहीं सुना किसी का। जरा सी ऊँची आवाज पर तो आधे गाँव की लाशें बिछा देते थे।

"मुझको क्या देखते हो? चुल्लू बाँधो!" लड़की की कड़कती आवाज दुबारा गूँजी।
सरदार ने मुँह के नकाब को खोलकर बगल में रखा। और आज्ञाकारी की तरह फौरन हाथ जोड़ लिया। वह घड़े से पानी उड़ेलने लगी।

पानी की कई छोटी धाराएँ अंजलि से बाहर निकलकर सरदार के पाँवों पर गिरने लगीं। मानो कन्या के हाथ का पवित्र जल उसके पापों को धोना चाह रहा हो।
गुलशन ने पानी पिलाते हुए ध्यान से सरदार की ओर देखा तो उसके चेहरे में पता नहीं क्यों उसको कुछ आकर्षण महसूस हुआ। एक मन ने संदेह किया किन्तु दूसरे मन ने तत्क्षण नकार दिया, 'नहीं, सम्भव नहीं।'
पानी पीकर सरदार ने पूछा, "तेरा नाम क्या है बेटी?"
"क्या कहा?" वह कड़क उठी?
"कोई गलती हो गई? मैं तो तेरा नाम पूछ रहा था।"
उसको लगा कि शायद उसका बेटी कहना उसे अच्छा नहीं लगा। "गुलशन!"
नाम सुनते ही वह उछल पड़ा। हृदय में नेह के बादल उमड़ आया। कहीं उसका अन्दाज़ सही तो नहीं परन्तु तुरन्त ही संयत होकर उसने पूछा, "तेरे घर में और कौन-कौन है?"
वह सिंहनी की भाँति गुर्रा उठी, "क्यों? क्या करोगे उनका?"
सरदार का मानो मुँह सिल गया हो। बड़ी जद्दोजहद के बाद बोल पाए, "ऐसे ही!"
"एक बार तो इस गाँव को तबाह कर चुके हो अभी कुछ और बाक़ी है?"
"नहीं बेटी, मेरा मतलब यह नहीं था।" सरदार का चेहरा स्याह पड़ गया।
"वैसे इस घर में केवल तीन जन हैं, मैं, बाबा और अमन। पर हम किसी से डरते नहीं। अब जल्दी से यहाँ से चलते बनो।" वह धमकाकर बोली।
"ठीक है, जाता हूँ। लेकिन हो सकता है जल्द ही दुबारा फिर आऊँ।" कहकर सरदार और उसके साथी उठ खड़े हुए।
रास्ते में एक साथी कहने लगा, "सरदारजी बहुत अच्छी छोरी थी।" दूसरा बोला, "तभी तो सरदार ने उसकी सारी गुस्ताखियों को माफ कर दिया। सरदारजी भी कम आशिकमिजाज थोड़े हैं?"

तीसरे ने ठहाका लगाया, “अरे भाईजान, सरदारजी बाद में उससे अकेले मिलेंगे।”

“बकवास बंद करो तुम सब!” सरदार ने सबको डांटा।

सरदार का बदला हुआ रुख आज साथियों को हैरान करने वाला था। आपस में खुसुर-पुसुर होने लगी। लड़की देखकर जिस सरदार की लार टपकने लगती थी। जो आदमी नई लड़कियों को ही ज्यादातर अपना शिकार बनाते थे, वह आज इस पर कोई बात नहीं सुनना चाहते! कुछ तो है! कुछ तो गड़बड़ है!

दूसरे दिन दरवाजे पर दस्तक हुई। अमन बाहर आया फिर भीतर लौटकर बाबा से बोला, “बाबा बाहर कुछ लोग आए हैं। वे सब गुलशन को पूछ रहे हैं।”

बूढ़ा घर से बाहर निकल आया। कल गुलशन ने जब उसको सारी बात बताई थी तभी से वह इन लोगों का इन्तज़ार कर रहा था। उसका अनुमान था कि शायद सरदार उसका अब्बू अथवा कोई रिश्तेदार है। सामने खड़े व्यक्ति से उसने पूछा, “कौन हो तुम? गुलशन को कैसे जानते हो?”

“हम लोग ऐण्टाबाद (पाकिस्तान) से आये हैं। दरअसल हमारी एक लड़की नौ साल पहले मुहर्रम के मेले में खो गई थी। कल मैंने गुलशन को देखा, उसकी शक्ल मेरी बेटी जैसी है। क्या वह आपकी लड़की है?”

“अच्छा तो कल तुमको ही उसने पानी पिलाया था?”

“हाँ हाँ!” सभी लोग एक साथ बोल पड़े।

“गुलशन मेरे खून से तो नहीं पैदा हुई है किंतु मैंने उसको अपनी सगी बेटी से कभी कम नहीं जाना है। इसलिए मैं यह कैसे कहूँ कि वह मेरी बेटी नहीं है?” बूढ़ा रुआँसा हो उठा। किसी तरह अपने को संभालकर फिर कहने लगा, “तुम लोग किस आधार पर कहते हो कि गुलशन तुम्हारी लड़की है?”

“हमारे पास उसकी तस्वीर है। जिसे हमने उसी ताजिया मेले में खिंचवाई था। यह देखिए मैं और वह, दोनों ताजिया के पास खड़ी हूँ।” कहकर गुलशन की अम्मी ने फोटोग्राफ को बूढ़े की तरफ बढ़ा दिया।

बूढ़े ने फोटो देखने के बाद कहा, “तो फिर उसका पता क्यों नहीं लगाया?”

"लगाया तो पर जब पूरा साल बीत गया और वह नहीं मिली तो मान लिया कि शायद वह भी बम धमाके में अल्लाह को प्यारी हो गई होगी।"

देर देखकर गुलशन भी बाहर आ गई। उसको देखकर वह औरत दौड़ पड़ी, "गुलशन! मेरी बेटी।"

गुलशन भी दौड़ पड़ी, "अम्मी!" परन्तु दो कदम दौड़कर ही वह रुक गयी और उन सबको डाँटते हुए बोली, "नहीं, तुम सब हत्यारे हो मेरे अब्बू और अम्मी नहीं! मेरे अब्बू और अम्मी सब कुछ यही मेरे बाबा हैं। तुम सब यहाँ से फौरन दफा हो जाओ।"

"बेटी मैं मानता हूँ कि अब तक मेरी आँखों पर जुल्म की काली पट्टी बँधी थी, जिससे मैं किसी के आँसू नहीं देख पाता था। कानों में वहशीयत का लावा पड़ा था, जिससे किसी का चीखना-चिल्लाना नहीं सुन पाता था। और बहुत से घर-परिवार को तबाह कर दिया। बहुत से गाँव को कब्रिस्तान में बदल दिया। मैंने ही इस गाँव को भी तबाह कराया था। पर यह भी सच है कि मैं ही तेरा अब्बू हूँ, अभागा अब्बूजान!" गुलशन के अब्बू का गला रुँध आया। आँखों से पश्चाताप के आँसुओं के परनाले बह निकले और औह उसी रौ में बोलते गए, "हम यह भी कसम खाते हैं बेटी कि आज से हम या हमारे जमात का कोई भी आदमी कभी बंदूक नहीं उठाएगा और न ही किसी बेगुनाह का कत्ल करेगा। अब हिन्दुस्तान और पाकिस्तान के बीच वही अमन, चैन और प्यार-मोहब्बत का पुराना रिश्ता रहेगा जो बँटवारे से पहले था। मगर बेटी अब हमें कुबूल कर लो। हमें अपने किए का फल इतने दिनों तक अपनी बेटी से दूर रहकर मिल गया।"

काफी देर तक शांत रहकर दोनों की बातें सुन रहा बूढ़ा आगे बढ़कर बोला, "अगर तुम सब आपसी प्रेम सौहार्द को बरकरार रखने का वादा करते हो तो यह बहुत अच्छी बात है। परन्तु यदि न भी करो तो बिटिया तुम्हारी है, तुम ले जा सकते हो? रामधन परिवार के बिछोह का दुःख जानता है। मुझे भी अपनी बुढ़िया और गाँववासियों के मारे जाने का बहुत कष्ट है। परन्तु जो एक बार हो गया सो भूलना ही ठीक है।"

गुलशन के अब्बू उसके पैर पर गिर पड़े, बोले, "आप मुबारक (धन्य) हैं, आपका मादरे वतन मुबारक है!"

"मातृभूमि तुम्हारी भी वही है जो हमारी है। क्योंकि घर में बँटवारा हो जाने से भाइयों के माँ-बाप नहीं बदल जाते, वे तो एक ही रहते हैं। हाँ, कर्म तुम सबका भिन्न है क्योंकि तुम सभी गिरे हुए स्वार्थी राजनीतिज्ञों के कठपुतली बन गए हो।" अपने पैरों से उनको उठाते हुए बूढ़ा बोला।

गुलशन बूढ़े की ओर खिसक आई। बूढ़े ने उसके सिर पर हाथ रखकर कहा, "जाओ बेटी, अपने अब्बू और अम्मी से मिलो।"

गुलशन रोती हुई पहले अपनी अम्मी से और फिर अब्बू से लिपट गई।

धीरे धीरे गुलशन के घर वापस जाने की घड़ी आ गई। सुबकती हुई वह बूढ़े के गले से लिपटकर बोली, "बाबा! तुम दिन मैं नहीं रह पाऊँगी।"

"नहीं बेटी जाओ। तुम्हारे माँ-बाप मिल गए। मुझे एक बहुत बड़ी जिम्मेदारी से छुटकारा मिल गया। मुझे अब कितने दिन जीना है? सत्तर-बहत्तर साल तो हो ही गया, गोली-बारूद से बच गया तो चार-छह बरस कहीं और जिऊँगा।" गुलशन को अपने से अलग करते हुए उसकी आँखें छलछला उठीं। आस-पास के वृक्षों पर बैठे विहग भी शांत हो गए।

बिलखती हुई गुलशन ने अमन को एक बार देखा फिर अपने अब्बू और अम्मी के साथ चल पड़ी। अमन की आँखों से आँसू झरझरा उठे। गुलशन अभी दो-एक बीघा रास्ता ही चली होगी कि वह चिल्ला उठा, "गुलशन…!"

वह लौट आई। लिपटकर उससे रोने लगी।

गुलशन की अम्मी ने बूढ़े से कहा, "बाबा मैं एक बात और कहना चाहती हूँ पर कह नहीं पाती।"

"कहो न! इसमें संकोच कैसा?"

"अमन को अपनी बेटी के लिए चाहती हूँ।"

इतना सुनते ही अमन और गुलशन दोनो एक दूसरे से अलग हट गए। अमन ने निगाहें झुका ली और गुलशन अपने अब्बू के पास चली गई।

"इससे बढ़िया बात भला और क्या हो सकती है कि दोनों मुल्कों के बीच नए रिश्ते की शुरुआत इस नए रिश्ते से ही हो!" कहते-कहते बूढ़े की आँखें खुशी से चमक उठीं।

थोड़ी देर मौन रहकर बूढ़ा मुस्कराकर बोला, “पर मैं अब तुमसे कुछ माँगूगा।”
“माँगो बाबा, जान भी माँग लो तो हमें देने में कोई गुरेज न होगी।” सभी एक स्वर में चिल्ला उठे।
“हाँ, तो सुनो! अमन को तो गुलशन मिल गई परन्तु वादा करो कि यह काश्मीर घाटी भी सकल विश्व के लिए अमन की गुलशन होगी।”
अब तक आश्चर्य से खुली आँखों में बूढ़े के प्रति प्यार व सम्मान का सागर उमड़ पड़ा।

✍ नंदन पंडित
इटियाथोक, गोण्डा-उत्तर प्रदेश

संक्षिप्त परिचय:-
पूरा नाम – रोहिणी नन्दन मिश्र
जन्मतिथि- 20 अगस्त 1983 ई०।
कृतित्व- अँखुआ (गीत संग्रह), बोल कबूतर (बाल काव्य संग्रह), रेती की सौंह (उपन्यास), माड़ौ होइ गे (उपन्यास)।
सम्प्रति- अध्यापन, बेसिक शिक्षा गोण्डा।

पत्राचार:-
रोहिणी नन्दन मिश्र
गाँव- गजाधरपुर
पोस्ट- अयाह, इटियाथोक
जनपद- गोण्डा, उत्तर प्रदेश
पिन कोड- 271202
मो० न०- 6009126009